





जो न कभी खिंच होता है, न ड़ेप करता है,
न जोक करता है, न कामना करता है
तदा जो सुध और समुध समुर्ध कर्मों का रचारी है-
वह भक्तिपूजक सत्य मयको प्रिय है ।

1006











